ओम् शान्ति। यह किसने कहा और किसको? बाप बैठ समझाते हैं, भक्तिमार्ग में यह गाया जाता है। जब प०पि०प० आते हैं वो ही आकर धीरज देते हैं। और कोई धीरज दे नहीं सकते। तुम जानते हो, सुख के दि(न) आवेंगे, बाप आकर सुखधाम ले जावेगा। यह है दुखधाम। यह सब भक्तिमार्ग की गती(गीत) हैं। यहाँ तो बाप सन्मुख बैठे हैं। बच्चों को कुछ कहने की दरकार नहीं पड़ती। बच्चे जानते हैं, हमारे सुख के दिन आ रहे हैं। हम सुख की राजधानी स्वयं श्रीमत पर स्थापन कर रहे हैं। डिवाइ(न) मत पर चल रहे हैं। ए(क) होती है डिवाइन मत, दूसरी होती है अन–डिवाइन मत। डिवाइन मत एक ही होती है श्रीमत की। अन–डिवाइन मत माना आसुरी, पतित मत। डिवाइन मत माना दैवी, पावन मत। श्रीमत और आसुरी म(त) को तुम समझते हो। डिवाइन कहा जाता है पावन को, अन डिवाइन कहा जाता है पतित को। यह है ही पतित दु(निया)। कोई भी पावन मनुष्य ही नहीं है। पावन मत देने वाला एक ही पतित–पावन बाप है। उनको सभी याद कर(ते) हैं; परन्तु यह है ही पतित दुनिया। पावन दुनिया होती तो याद क्यों करते? याद करते हैं ज़रूर पतित सृष्टि है। पावन सृष्टि सतयुग को, पतित सृष्टि कलियुग को कहा जाता। यहाँ सब हैं ही अन–डिवाइन। डिवाइन फाद(र) एक होता है। पतित दुनिया में कोई डिवाइन फादर होता नहीं। यह संगम का युग है तुम्हारे लिए, दुनिया के लिए नहीं है। दुनिया तो समझती है संगमयुग आने में बहुत बरस पड़े हैं। आवेगा ज़रूर। कलियुग है पतित युग। बाप आवेंगे पतित कलियुग को पावन सतयुग बनाने। ऐसे तो कुमार अथवा कुमारियाँ भी डिवाइ(न) पावन हैं; परन्तु फिर पतित ज़रूर बनना है। विकार से जन्म लेते हैं; इसलिए इस विकारी दुनिया में कोई डिवाइन होते नहीं। डिवाइन निर्विकारी को कहा जाता है। निर्विकारी होते हैं निर्विकारी दुनिया में। वो है ही वाइसलेस दुनिया, सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। जबकि सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया है तो सम्पूर्ण

विकारी दुनिया भी होगी। वो है सम्पूर्ण अन–डिवाइन दुनिया। सम्पूर्ण डिवाइन दुनिया सतयुग को कहा (जाता है)। अब तुम बच्चों को धीरज आया हुआ है। डिवाइन फादर ने धीरज .... बनाया है। डिवाइन जीव आत्मा कहा जाता। सिर्फ आत्मा को डिवाइन नहीं कह सकेंगे। आत्माएँ तो निराकारी दुनिया में रहती हैं। डिवाइन मनुष्य होते हैं पवित्र दुनिया में। ये है ही अपवित्र दुनिया। अपवित्र दुनिया को पवित्र बनाना ये निराकार डिवाइन फादर का ही काम है। तुम बच्चों को (अ)ब धीरज मिलता है, बच्चे, अब सतयुग आ रहा है। सुखधाम स्थापन करने में समय लगता है। फट से दुखधाम विनाश हो, (सुख)धाम नहीं स्थापन हो जावेगा। तुमको भी देखो कितना टाइम लगा है। पतित सृष्टि कितनी बड़ी है। तुम भी जब लायक बनो (ना)। तुम खुद ही कहेंगे, हम अभी पूरे लायक न बने हैं स्वर्ग जाने के। कुछ न कुछ (खामी) नालायकी ज़रूर होगी। लायक बन जाय फिर तो कर्मातीत अवस्था हो जाय; परन्तु बहुतों में देह अभिमान होने कारण समझते हैं, हम तो सम्पूर्ण बन गए हैं, हमको श्रीमत की दरकार नहीं है; इसलिए बाप को याद नहीं करते। याद से ही तो श्रेष्ठ बनेंगे। कोई कह नहीं स(कते), हम निरंतर बाप को याद करते हैं। अन्दर भी कोई ऐसे न समझे कि हम तो निरंतर बाप की याद में रहते हैं। याद में रहते रहें तो बाकी क्या चाहिए! सारा दिन भी कोई याद में रहे तो कर्मातीत अवस्था हो जाय। बड़ा मुश्किल है बाप की याद में रहना। तुम पुरुषार्थ कर रही हो सुखधाम में राजभाग लेने लिए। अपन को देखना है। अगर हमारे में बहुत विकार है, कमियाँ हैं तो हम इतना ऊँच पद पाय न सकेंगे। दौड़ी पाय न सकेंगे निरंतर याद की। अपन को मिया–मिट्ठू नहीं समझना है मैं तो सम्पूर्ण हूँ। सम्पूर्ण होते ही शिवालय में (सतयुग)। (सारा) भारत शिवालय बन जाता है। ल०ना० का राज्य चलता है। मंदिर में राज्य तो नहीं करते हैं ना। शिवालय सतयुग में देवी–देवताएँ सब राज्य करते हैं, फिर पूजा के लिए ... ल०ना० का चित्र बनाय उसका मंदिर बनाते हैं। पहले नम्बर वाले की ही पूजा होती है। अ... उन्हों के जड़ मंदिर हैं उनमें ..... है। चेतन में जब राज्य करते हैं तो विश्व के मालिक हैं। (भल) हैं भारत में ही; परन्तु हैं तो विश्व के मालिक ना। और कोई राजाई ही नहीं। फिर से अपना डिवाइन राज्य स्थापन कर रहे हैं। पावन दुनिया में जाने लिए पहले ज़रूर पावन बनना पड़े। मेहनत लगती है। जां जीना है याद रखनी है और ज्ञान की वर्षा तो होती ही रहती है। भिन्न–2 प्रकार से समझाया जाता है। वास्तव में डिवाइन अथवा पवित्र ल०ना० के सिवाय किसको कह नहीं सकते। भल सन्यासी पवित्र रहते हैं; परन्तु वो हैं फिर भी पतित दुनिया में। विकार से पैदा होते हैं। जानते भी हैं स्त्री नागिन है; इसलिए उनको छोड़ जाते हैं। फिर भी जन्म तो उनसे ही लेना पड़ता है। यह खुद थोड़े ही समझते हैं। शंकराचार्य ने सन्यास धर्म स्थापन किया। अच्छा काम किया; इसलिए उनकी महिमा है; परन्तु ऐसे तो नहीं उनका अच्छा काम सदैव ठहरता रहा। फिर भी वो काम बुरा हो ही जाता है। बाप भी स्वर्ग स्थापन करते हैं, फिर भी नर्क बन ही जाता है। ड्रामा ही सुख और दुख का बना हुआ है। शंकराचार्य आकर अपने धर्म की स्थापना करते हैं फिर भी डार–टार पुराने तो होंगे ना। सन्यासियों की महिमा है, रामतीर्थ, विवेकानन्द आदि गाए जाते हैं; क्योंकि शंकराचार्य के ही पिछाड़ी वाले हैं। नए–2 आते हैं तो वो अपना शो करते हैं; परन्तु यह है तो वैश्यालय ना। उनको शिवालय तो नहीं कहेंगे। शिव का स्थापना किया हुआ सतयुग एक ही है। मनुष्य इन बातों को बिल्कुल जानते नहीं। ऐसे ही सिर्फ सुनने से कोई समझ न सके। पहले तो 7 रोज़ आए एम–ऑब्जेक्ट को समझना है। और कोई पढ़ाई के लिए ऐसे नहीं कहा जाता कि पहले 7 रोज़ समझो। यह एक ही पाठशाला है जहाँ लक्ष्य दिया जाता है। पहले–2 तो फादर को समझो। बाप कहते हैं, मैं बच्चों की सेवा करने आया हूँ। जो कल्प पहले वाले हैं वो ही आवेंगे। जब तक निश्चयबुद्धि न बना है तब तक बुद्धि (में) बैठेगा नहीं। इसलिए बा(बा) पूछते हैं, कहाँ तक निश्चय हुआ है। यह कोई गामतू सतसंग नहीं। और सतसंगों में तो कहेंगे, फलाना

महात्मा गीता सुनाते हैं, फलाना वेद सुनाते हैं। यहाँ कोई महात्मा आदि नहीं है। यह तो बाप बैठ समझाते हैं। पहले जब तक निश्चय नहीं तब तक क्या समझे। वहाँ सतसंगों आदि में तो समझेंगे, तो यह फलाना वेद सुनाते हैं, राजविद्या पढ़ाते हैं। यहाँ तो वेदों–शास्त्रों अथवा राजविद्या आदि की कोई बात नहीं। तुम जानते हो, बाबा इन द्वारा पढ़ाय रहे हैं। जब तक यह न समझा है तो क्या करेंगे, और ही वायुमण्डल को खराब कर देंगे। यहाँ तुम्हारे में भी ऐसे नहीं हैं कि सब शिवबाबा की याद में सुनते हैं। समझते हैं शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा पढ़ाते हैं। नहीं। शिवबाबा क्या पढ़ाते हैं? कुछ भी समझते नहीं। बड़ा मुश्किल कोई यथार्थ रीति समझते हैं। पढ़ाने वाला शिवबाबा है, यह याद हो। तो सारा दिन बुद्धि में रहना चाहिए हम स्टूडेंट्स हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। बाप कहते हैं, मुझ पढ़ाने वाले को याद करो। मैं ही बाप, टीचर, सत्गुरु हूँ। तीनों को (इ)कट्ठा याद करना है। लौकिक संबंध में तो बाप अलग, टीचर अलग, गुरु अलग–2 होते हैं। यहाँ एक को ही याद करना पड़ता है और है बहुत सहज; परन्तु माया याद रखने नहीं देती, घड़ी–2 बुद्धियोग तोड़ देती है। तुम बच्चे आपस में बैठते होंगे, समझो कोई मशीन चलाते हैं अथवा माखन निकालते हैं तो शिवबाबा को याद कर मशीन चलानी है। शिवबाबा की याद में बाबा के यज्ञ के लिए माखन निकाल रहा हूँ। कितनी खुशी की बात है। यज्ञ के लिए भोजन बनाता हूँ। खुशी होती है ना; परन्तु फिर घड़ी–2 भूल जाते हैं। फिर पुरुषार्थ करना पड़े याद का। एक/दो को याद कराने, पुरुषार्थ कराने वाला चाहिए। फिर भी शिवबाबा को वा ब्राह्मणों को भोग लगना है। शिवबाबा को याद कर भोजन बनावेंगे तो उसमें बहुत ताकत भर जावेगी। तुम्हारी अवस्था बहुत अच्छी हो जाय; परन्तु ऐसे होता नहीं है। ब्रह्मा भोजन की तो बहुत महिमा है। देवताओं को भी दिल होती है। अभी तुम जानते हो, ब्राह्मण ही देवता बनते हैं इस पवित्र भोजन खाने से। कितनी महिमा है इस भोजन की; परन्तु अब ऐसा मिले, शिवबाबा की याद में रह बनावे। शक्तियों का ऐसा भण्डारा हो। योग में रह भोजन बनावे तब तो शक्ति मिले। वो भी शक्तियों की बुद्धि में नहीं आता है, नहीं तो पुरुषार्थ करे। बाबा को तो दिल होती है अपने हाथ से शिवबाबा को याद करते भोजन बनाऊँ। प्रैक्टिस करनी है। देखें, याद ठहर सकती है। बाबा चैलेंज देते हैं, जो भी भण्डारे में हैं, कोशिश करो। बाबा जानते हैं, एक घण्टा भी याद नहीं कर सकते हैं। याद वाले ज्ञानवान हों तो सर्विस में लग जाय। उनको फिर यहाँ सुख न आय। जब तक काँटे को फूल ना बनावे तो कुछ भी काम की न है। राजाई के लायक वो बनते जो नर को ना० बनाने की सर्विस करते। बाकी सिर्फ खाना बनाने से थोड़े ही किसको दान दे सकेंगे। यह भी हर एक का अपना पार्ट है। जितना तकदीर में है वो अपने पुरुषार्थ से तकदीर पाते रहते हैं। बात तो सबको कहते हैं, जितना जो करेंगे सो पावेंगे। अपने बिलवेड मोस्ट बाप को याद करना है। वो सभी का बाप है। याद करने की ही मेहनत है। बाप भी बतलाते हैं, मैं बहुत उपाय करता हूँ; परन्तु हो नहीं सकता। बहुत मेहनत है। मेहनत करते–2 अन्त में कर्मातीत अवस्था होगी, फिर शुभ सा० करते रहेंगे। माया नहीं आवेगी। यहाँ बैठे–2 सब दिव्य दृष्टि में देखते रहेंगे। अभी तो टेलीविज़न में देखते हैं। टेलीविज़न कोई दिव्य दृष्टि नहीं है। विनाश सा० वा वैकुण्ठ सा० टेलीविज़न में नहीं देख सकेंगे। जितना–2 जो योगी और ज्ञानी रहेगा उनको तो वैकुण्ठ की राजधानी देखने में आती रहेगी। बिगर टेलीविजन से दिव्य चक्षु का सा० वण्डरफुल है। सच्ची दिल से बाप की सर्विस में लगना है तब मज़ा है अन्त में। बुद्धि भी कहती है, बाबा बहुत खातरी भी करेंगे। घुमाना–फिराना–बहलाना यह खातरी है ना। ऐसा बनने के लिए भी लायक बनना चाहिए ना। नालायक से लायक बनना है। लायक बनाने वाले को याद करने से ही लायक बनते जाते हैं। जितना याद करेंगे और स्वदर्शनचक्र फिरता रहेगा तो फायदा है। बीज को याद करने से झाड़ भी याद आवेगा। जितना जो करेगा वो अपने पैर पर खड़ा रहेगा। यह बातें तुम्हारे सिवाय कोई भी

समझ न सके। इस याद और ज्ञान से हम इतना जमा करते हैं। वहाँ भी पता नहीं पड़ेगा कि यह कहाँ से (मिला) है। यह थोड़े ही समझते हैं कि यह हमारे समय की की हुई कमाई है। बादशाही मि(ल) जाती है। तुम सदा सु(खी) रहते हो। बड़ी भारी मंज़िल है। अभी तुम डिवाइन बनते हो। सारी दुनिया अन–डिवाइन है। तुम मनुष्य से देवता, डिवाइन बनते हो। मनुष्य को देवता बनाने वाला एक ही गॉड फादर है। फादर अक्षर कहना तो बड़ा सहज है। कोई भी बूढ़ा बुजुर्ग देखेंगे तो उनको बाबा वा पिताश्री कहेंगे। बूढ़ा बूढ़ी को देखेंगे तो भाई समझेंगे। छोटा बड़े को देखेगा तो बाप समझेगा। निराकारी बाप का तो कोई को पता नहीं। सिर्फ कह देते हैं गॉड फादर। यह नहीं समझते कि हम आत्मा है, हमारा वो बाप है। बाप ज़रूर वर्सा देता होगा। अभी तुम जानते हो, हमारा बाप हमको वर्सा दे रहे हैं। इस वर्से के लिए ही हम बार–2 पुकारते थे, प्रार्थना करते थे। अब वो हमें पढ़ा रहे हैं। अभी हम प्रार्थना अथवा भक्ति करने से छूटे। बड़ी मज़े की नॉलेज है। कहते भी हैं आप हमारे बेहद के बाप हो। फिर हमको छोड़ लौकिक बाप के पास क्यों जाते हो, अगर बंधनमुक्त हो तो? राजाई तब मिल सके जब बाबा की गोद में आय बैठें। दुख की तो कोई बात नहीं; परन्तु किसकी तकदीर में न है तो बैठता नहीं। खुद ही कहे, हमारी तकदीर में राजयोग बादशाही न है, तो बाबा क्या करें? क्यों नहीं तकदीर बनाते हो? तकदीर बनाने में तो मनाह करने वाला कोई है नहीं। तकदीर में न है तो बाबा को छोड़ देते, फिर माया बिल्ली बुद्धि में घोटाला डाल देती है। बाप भी क्या करे! माया बिल्ली पर भी जीत पानी है। काम–काज करते, शिवबाबा की याद रहे तो बहुत फायदा हो जाय। एक मिनट याद करने से बड़ा फायदा हो सकता है। एक/दो को सावधान करो। फिर कोई माने, न माने। बाबा युक्तियाँ बहुत बतलाते हैं। बोलो, हमको स्वप्न आते हैं, भगवान का फरमान मिला है। अच्छा, कृष्ण ही कहो। कृष्ण हमें कहते हैं, पवित्र बनो तो कृष्णपुरी के मालिक बनोगे। हम तो कृष्णपुरी में ज़रूर जाऊँगी। पहले कृष्ण का नाम दे फिर आहिस्ते–2 समझाते रहना चाहिए। युक्तियाँ चाहिए। फिर मदद भी मिल जावेंगे। दिल साफ होगी तो मुराद हासिल होगी। बीज और झाड़ का ज्ञान बुद्धि में होना चाहिए। सर्विस करेंगे तो ऊँच पद पावेंगे। सर्विस फर्स्ट।

यहाँ कोई भी आते हैं तो उनसे हम पूछ सकते हैं, तुम पतित हो या पावन हो? गाते भी हैं पतित–पावन आओ। तो ज़रूर पतित ठहरे ना! पावन दुनिया सतयुग को कहेंगे। यह है ही पतित को पावन बनाने की इंस्टीट्यूशन। पहले 7 रोज़ भट्ठी में बैठना पड़े। आधा कल्प की बीमारी है। यहाँ का कायदा है 7 रोज़ भट्ठी का। पतित सिद्ध कर देना है। तुम पूछ सकते हो, अगर तुम पावन हो तो यहाँ क्यों आए हो? यह तो पतित दुनिया है। तुम पावन हो तो क्यों आए हो, जाओ पावन दुनिया में। बड़ा युक्तिबाज़ चाहिए फार्म भराने वाला। अच्छा, मीठे–2, सिकीलधे, लकी ज्ञान सितारों प्रति.. .... तुम बहुत लकी हो; क्योंकि तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो। मैं किसको न सुख देता हूँ, न दुख देता हूँ। तो बाप कहते हैं– मेरे सिकीलधे, बिलवेड मोस्ट, लकी सितारे। जो जास्ती चकमक हैं उनकी महिमा है। वो लकी ठहरे। वो साइंस घमण्डी कितनी कोशिश करते हैं ऊपर स्टार्स, चंद्रमा तरफ जाने की; परन्तु पहुँच न सकें। खुद भी कहते हैं, अजन क्वाटर रास्ते पर भी पहुँचे न है। यह तो बिल्कुल दूर है। असम्भव है कोई पहुँच सके; परन्तु साइंस का घमंड है ना। अशुद्ध घमंड विनाश कर देते हैं। ऐरोप्लैन्स कितने निकाले हैं। इन ऐरोप्लैन्स से ही फिर विनाश करने वाले हैं। मुसाफिरी के लिए भी बड़े अच्छे ऐरोप्लैन्स बनते हैं और फिर ऐरोप्लैन्स में ही बॉम्ब्स, बन्दूकें आदि भी ले जाते हैं। एक तरफ सुख, दूसरे तरफ अति दुख है। अच्छा, सिकीलधे ज्ञान सितारों प्रति मात–पिता, बाप–दादा का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ